आपातकाल में सृजन फुलवारी

गरिमा कांसकार

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

गरिमा कांसकार

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-101-5
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020, गरिमा कांसकार
मूल्य - 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY GARIMA KANSKAR

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेंशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	न्याय	6
2.	दो अजनबी	7
3.	अपनी पहचान	8
4.	लगन	9
5.	मेरा क्या कसूर	10
6.	मूर्ख स्त्री	11-12
7.	मनुष्य तेरा यही फसाना है	13
8.	चेहरे	14
9.	गया वो जमाना	15
10.	थप्पड़	16
11.	बैचैनी	17
12.	प्यार उम्मीद है	18
13.	साथ-साथ	19
14.	सेल्फिश	20
15.	आओ बहन चुगली करें	21

न्याय

न्याय कोई प्रसाद नहीं जो
मंदिरों में बटता हो
हाथ फैलाओ और मिल गया
इसे लेन के लिए
करना होता है कड़ा संघर्ष
रखना होता है सब्र
हर पल बढते रहना पड़ता है
हर पल सारे सबूत होने के
बाबजूद नकारा जाता है
कोई सच को समझ ही नहीं पाता है
सच का प्रतिकर्षण इतना अधिक होता है
कि इसे दूर करना भी
एक चुनौती से कम नहीं होता है
और झूठ का आकर्षण इतना
अधिक होता है कि लोग
लगातार जुड़ते चले जाते है
झूठ का करबा बनता चला जाता है
और फिर होती है खुदा की रहमत
झूठ के बादल छट ही जाते है
सच को न्याय मिल जाता है
और मन को शान्ति!

दो अजनबी

दो अजनबी एक जगह टकराये
सो सॉरी कहकर आगे बढ़ गए
न जाने फिर इत्तेफाक से बार-बार टकराये
बार-बार तकरार होते होते
न जाने कब बार-बार लड़ते-लड़ते
करने लगे ढेरों बातेँ
फिर रखने लगे एक दूसरे का ख्याल
जो हर वक्त मचाते थे बबाल
जो एक दूसरे को
सबसे बड़ा दुश्मन समझते थे
वो एक दिन सबसे अच्छे दोस्त बन गए
या यूं कहो कि
जीवन में सबसे खास बन गए
फिर घर वाले से बात करके
जीवन साथी बन गए
फिर एक दिन एक छोटी सी बात
इतनी बढ़ गई कि सम्भाले नहीं सम्भली
सात जन्मों तक साथ निभाने का वादा करके
तमाम कसमो वादो को ताक पे रखकर
वो दोनों अजनबी हो गये!

अपनी पहचान

कभी कभी जिंदगी
में इतना मुश्किल
वक्त आता है कि चारों ओर
अंधेरा ही अंधेरा नजर आता है
ऐसा लगने लगता है
कि अब जिंदगी में
कुछ न रह गया है
दिल और दिमाग मे
एक जंग सी छिड़ जाती है
दिमाग दिखाता है अपने रंग
दिल कहता है नहीं चलूँगा तेरे संग
मैं अपनी ही राह पर चलूँगा
दिल अपनी जिंदगी के
ग्रहण को हटाकर
अपनी राह बनाकर
भीड़ से अलग अपनी पहचान
बना ही लूँगा
तो देखना
दिमाग भी कहता है
मैं तेरा ही हिस्सा हूँ
तेरी ही खुशी चाहता हूँ!

लगन

जब लगन
सच्ची होती है
राह में लाख
मुश्किलें हो
हौसले के आगे
झुक ही जाती है
देर सबेर हमें अपनी
मंजिल तक पहुँचा ही जाती है
हमें हमारी छुपी हुई प्रतिभा
से मिल ही जाती है
और हम अपनी
लगन के बल पर
नहीं पहचान बना पाते है
और सारी दुनियाँ अपना
बना पाते है!

मेरा क्या कसूर

एक लड़की
बंद पलकों मे
ढेरों सपने सजाये
छोड़ बाबुल का आँगन
आती है साजन के आँगन
उसकी मेंहदी का रंग
उतरा भी नहीं
की उसे पता चलता है
की जिसे वो अपना समझकर आई थी
वो उसका है ही नहीं
वो तो किसी ओर से प्यार करता है
वो तो परिवार की खातिर
वह बंध गया इस बंधन में
पर मैं दिल को नहीं समझा पाऊँगा
मैं तुम्हें कभी अपना नहीं पाऊँगा
तो लड़की ये भी
नहीं कह पाती कि इन सब में
मेरा क्या कसूर
एक बुत सी खड़ी रह जाती है!

मूर्ख स्त्री

आसान नहीं होता मूर्ख स्त्री से प्रेम करना
क्योकि उन्हे पसंद होती जी हजूरी
झुकना किस चिड़िया का नाम
वो तो जानती ही नहीं

अपनी हर बात में
हाँ-हाँ करवाना जानती हैं
क्योकि उन्होंने सीखा है
रिश्तो को झूठ की डोर से बांधना

वो जानती हैं
स्वांग की चाशनी में डुबोकर अपनी बात मनवाना
वो जानती है
बड़ी आसानी से झूठ बोल जाना

फिजूल की बहस में पड़ जाना उनकी
आदत में शुमार होता है
वो बखूबी जानती है सबका
वक्त बर्बाद करना

वो क्षण-क्षण
गहने कपड़ो की माँग करती है
रोज पार्लर में जाकर सबरती है
सपना रूप निखारती है

महँगी महँगी क्रीम पाऊडर से
उन्हे कभी पसंद नहीं आता
कि कोई उनकी गलतियों पर टोके उन्हे
हर किसी को तकलीफ देती है

उन्हें बखूबी आता है
दुसरो की गलतियों पर टोकना
किसी को तकलीफ पर सम्भालती नहीं है
उल्टा तकलीफ का मजाक उड़ाती है

उन्हे नहीं आता
घर सम्भालना
न ही सपनों को पूरा करना
बस आता है तो मुँह चलाना

अनर्गल बातों से
सबका वक्त बर्बाद करना
सबको धोखा देना
छलावा करना

बहुत मुश्किल है
ऐसी मूर्ख स्त्री से प्रेम करना
और ऐसे रिश्तो को निभाना
जहाँ प्रेम की मजबूरी हो!

मनुष्य तेरा यही फसाना है

जब होती है
किसी की मृत्यु
वो छोड़ जाती है
प्रतिबिम्ब अपनी मृत्यु का!

वर्तमान में ही
हमें भविष्य की सूरत दिखला जाती है.
कि हम लाख घर बनाते रहे
दिनरात पैसों के पीछे भागते रहे

अपनों से दो वक्त
न बोले प्यार भरे मीठे बोल
हर बात में पैसों को तोले
कमा ले पैसे भर-भर के झोले

कुछ भी साथ
नहीं जाने वाला
सब कुछ यही रह जाने वाला है

ओर हमें मुट्ठी भर
राख का ढेर बना जाता है
बस मनुष्य तेरा यही फसाना है!

चेहरे

हर इंसान के सौ चेहरे
किस चेहरे पे विश्वास करूँ

किस चेहरे से आस लगाऊँ
हर चेहरे पे स्वार्थ के पहरे

क्योकि हर शख़्स अपनेपन की चादर ओढ़े
मेरे ज़ख्म कुरेदते नजर आता है

मेरे ख्बाब सिर्फ मेरे ही
जो मैं किसी को क्यो बताऊँ

वो चेहरा मुझे
आईने में नजर आता है

उसी के संग बाँटू अपने सारे दुख सुख
उसी के संग नये ख्बाब सजाऊँ!

गया वो जमाना

गया वो जमाना
जब लोग चेहरा
देखकर दिल
का हाल जान लेते थे
आज हर कोई
अपने मोबाईल में
नजर गड़ाये
नजर आता है
फील का हाल
दिल ही जाने
गुम हो गये है
खामोशी जानने वाले

मैं ही अपने साये को पहचानता हूँ
अपने आप को ज्यादा से ज्यादा जानता हूँ..!

थप्पड़

एक थप्पड़
एक ही बार
आपके गाल पर पड़ता है
पर उसकी गूंज
हमारे कानों पर
सुनाई देती है
जो हमें अपनी
गलती का
एहसास कराती है
गलती का एहसास
होने के बाद
उसे सुधारकर
हम उस थप्पड़ का
जबाब दे सकते है
और लोगों को
बिना चोट पहुँचाये
तोड़ सकते हैं!

बैचैनी

हर रोज
हर किसी को
कुछ न बैचैनी
होती ही है
हर कोई
चैन की तलाश
में फिरता ही रहता है
कभी किसी को
कोई शुकुन मिलता ही नहीं
कभी कुछ
तो कभी कुछ
चलता ही रहता है
बैचैनी को
चैन दिलाने के लिये
हर किसी को
कोई न कोई
तलाश रहती है!

प्यार उम्मीद है

प्यार उम्मीद है
रोशनी है
जो हमें अँधेरे से
उजाले की
ओर ले जाता है
और हमें ये
एहसास कराता है
की जीवन कितना
खूबसूरत है
हम अपने
दर्द में इस
कदर खो जाते है
की जीवन की
खूबसूरती देख ही
नहीं पाते है
जो दिखाने हमें
हमारे जीवन मे
प्यार आता है!

साथ-साथ

फूल और काँटे
व्यवहार में
कितने अलग
फिर भी
रहते है
साथ-साथ
ये रिश्ता
बहुत ही अलग है
इसमें दर्द है
चुभन है
तड़प है
फिर भी
नहीं है कोई
शिकायत
न शिक़वा
बस दोनों है
साथ-साथ!

सेल्फिश

आज की जिंदगी कितनी व्यस्त है
कि सभी लोग हो गए त्रस्त है
किसी के पास
किसी के लिये नहीं है वक्त
किसी को छोड़ो
अपने लिये ही वक्त नहीं
पता नहीं क्यो दे रहे है
अपने आपको कष्ट
न खाते है
न सोते है
पता नहीं किस दुनिया में खोये
एक अलग सी
दुनियाँ में मस्त होते है
किसी के पास
किसी के लिये नहीं है टाईम
ऐसे में टूट जाती है हर उम्मीद
रह जाती है निराशा
ऐसे में हमें अपनी
मदद खुद ही करनी होती है
तो क्यो करे किसी से उम्मीद!

आओ बहन चुगली करें

वो जमाना भी था कितना सुहाना
जब दो सहेलियाँ
बैठकर न जाने
कहाँ कहाँ की बातें
किया करती थी
साथ समोसों के
संग चाय की
चुसकियाँ लिया करती थी
कितनी चुगली
कितनी निंदा
बातों ही बातो में निकल जाता था
कभी घुटन सी
महसूस की ही नहीं थी
हर पल एक नई ताजगी
और ऊर्जा का संचार रहता था
कभी लगा ही नहीं कि कुछ कमी सी है
बस अब सोचो तो लगता है कि
सहेलियों की जिंदगी में कितनी कमी है
उनके बिन जिंदगी में नमी ही नमी है!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

आपात काल मेरे लिये किसी वरदान से कम नही हुआ। मेरे जिन शौकों को वर्षों से जंग लग गई थी। उसे जैसे नवजीवन मिल गया हो। मुझे पौधें लगाने का वक्त मिला। जिन्हें देखकर मन को बहुत शुकुन मिलता है। कविता कहानी मन मे हिलोरे लेती थी कभी कागज में उतर नही पाती थी। आज कागज पर उतार पा रही हूँ। मन खुश हो जाता है उन्हें पढ़कर और अपने आपको वक्त दे रही हूँ। योगा, प्राणायाम, करके स्वास्थ्य को सही कर रही हूँ वही मेडिटेशन करके अपने साथ वक्त गुजार रही हूँ। सबका ख्याल रखते रखते खुद को भूल जाती थी अब अपना ख्याल रखा रही हूँ। कम शब्दों में कहूँ तो बहुत खुश हूँ।

रचनाकार
गरिमा कांसकार
Email- garima.kkr10@gmail.com
Mobile - 7772964062

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-101-5
मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/